7. व्यापार और भूमंडलीकरण

व्यापारः- दो व्यक्तियों या दो देशों के बीच खरीद विक्री को व्यापार कहते हैं।

भूमंडलीकरण:- दुनिया के सभी देशों को आपस में जोड़ना भूमंडलीकरण कहलाता है।

- सिंधु घाटी सभ्यता का व्यापारिक संबंध मिश्र और मेसोपोटामिया की सभ्यता के साथ था।

विश्व बाजार:- वैसा बाजार जहां विश्व के सभी देशों की वस्तुएं आम लोगों के लिए उपलब्ध हो उसे विश्व बाजार कहते हैं ।

जैसे:- मुंबई

- दुनिया का सबसे पहला विश्व बाजार अलेक्जेंड्रिया था।
- अलेक्जेंड्रिया तीन महादेश अफ्रीका, यूरोप और एशिया का व्यापारिक केंद्र था।
- अलेक्जेंड्रिया को लाल सागर के मुहाने पर यूनानी विश्व विजेता सम्राट सिकंदर ने स्थापित किया था।

वाणिज्यिक क्रांतिः- व्यापार के क्षेत्र में होने वाले अभूतपूर्व विकास और विस्तार को वाणिज्यिक क्रांति कहा जाता है।

- वाणिज्यिक क्रांति का केंद्र इंग्लैंड था।
- भौगोलिक खोजों, जागरण तथा राष्ट्रीय राज्यों के उदय ने वाणिज्यिक क्रांति को जन्म दिया।

औधोगिक क्रांतिः- वास्तु शक्ति से संचालित मशीनों द्वारा बड़े-बड़े कारखाने में व्यापक पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन करना औद्योगिक क्रांति कहलाता है। औद्योगिक क्रांति का केंद्र इंग्लैंड था।

उपनिवेशवादः- किसी शक्तिशाली दिवस द्वारा किसी कमजोर देश पर कब्जा करना उपनिवेशवाद कहलाता है।

- एशिया और अफ्रीका तथा दक्षिण अमेरिका में यूरोपीय देशों द्वारा उपनिवेश का स्थापना किया गया।
- उपनिवेशवाद का उद्देश्य आर्थिक शोषण करना होता था।
- इंग्लैंड को अपने उपनिवेशों से कच्चा माल और बाजार दोनों मिल जाता था।

- इंग्लैंड के मैनचेस्टर, लिवरपूल, लंदन जैसे शहर उपनिवेशवाद का ही परिणाम था।

गिरमिटिया मजदूर:- औपनिवेशिक देश के ऐसे श्रमिक जिन्हे एक निश्चित समझौता द्वारा निश्चित समय के लिए अपने शासित क्षेत्रों क्षेत्र में ले जाकर कृषि करवाया जाता था, उसे गिरमिटिया मजदूर कहा जाता था।

- भारत के पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिम विहार पंजाब, हरियाणा से गन्ना की खेती के मजदूर की फिजी, मॉरीशस, जमैका, टोवेगो, त्रिनिदाड आदि देशों में मजदूर ले जाया जाता था।

विश्व बाजार की उपयोगिता :-

- व्यापारियों, श्रमिकों, पूंजीपत्तियां, मध्यम वर्ग तथा आम उपभोक्ताओं के हित को विश्व व्यापार सुरक्षित रखता है।
- विश्व बाजार में किसानों का उपज का अच्छा कीमत मिलता है।
- श्रमिक कुशल श्रमिकों को विश्व स्तर पर पहचान तथा महत्व मिलता है।
- विश्व बाजार में रोजगार के नए-नए अवसर सृजित होते हैं।

विश्व बाजार के लाभ :-

- व्यापार और उद्योग की तीव्र गति से वृद्धि।
- पूजीपति, मजदूर और मध्यम वर्ग नामक सामाजिक वर्ग का जन्म।
- बैंकिंग व्यवस्था का उदय और विकास ।
- औद्योगिकरण और और आधुनिकरण का उदय।
- औपनिवेशिक देश में संरचनात्मक क्षेत्र का विकास।
- नई-नई फसलों का उत्पादन।
- नई तकनीक का सृजन ।

विश्व बाजार के हानि :-

- औपनिवेशिक देश का शोषण।
- लघु और कुटीर कुटीर उद्योग का अंत।
- औपनिवेशिक देश में बेरोजगारी की समस्या ।
- औपनिवेशिक देश में गरीबी और भुखमरी की समस्या।

साम्राज्यवादः शक्तिशाली देशों द्वारा कमजोर देश पर सैनिक शक्ति द्वारा विजय प्राप्त कर उसे अपने प्रत्यक्ष अधीन में रखना साम्राज्यवाद कहलाता है।

- यूरोपीय देशों द्वारा एशिया और अफ्रीका के क्षेत्र को साम्राज्यवाद के अधीन रखा गया।

प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव :-

- प्रथम विश्व युद्ध के कारण यूरोप की अर्थव्यवस्था तबाह हो गई।
- प्रथम विश्व युद्ध के बाद अमेरिका की संपत्रता बढ़ गई।

आर्थिक मंदी:- अर्थव्यवस्था में आने वाली वैसी स्थिति जब कृषि, उद्योग और व्यापार का विकास अवरूद्ध हो जाए, लाखों लोग बेरोजगार हो जाए, बैंकों और दिवालिया हो जाए तथा वस्तु और मुद्रा दोनों का बाजार में कोई कीमत ना रहे तो उसे आर्थिक मंदी कहा जाता है।

- विश्व व्यापी आर्थिक मंदी 1929 ईस्वी में आया था।
- द कॉमर्स ऑफ नेशन पुस्तक के लेखक कार्डलीफ है।

1929 के आर्थिक महामंदी के कारण :-

- कृषि का अधिक उत्पादन।
- उत्पाद के मूल्य में कमी।
- उपभोक्ता की कमी।
- अमेरिकी पूंजी के प्रवाह में कमी।

1929 के आर्थिक मंदी का विश्व पर प्रभाव :-

- अमेरिका का बैंकिंग व्यवस्था चौपट हो गया।
- गरीबी और बेरोजगारी बढ़ गया।
- ब्रिटेन और जर्मनी बहुत अधिक प्रभावित हुआ।
- फ्रांस पर इस मंदी का कम प्रभाव पड़ा।

1929 की आर्थिक मंदी का भारत पर प्रभाव :-

- व्यापार में भारी गिरावट हुआ।

- कृषि उत्पादन के मूल्य में कमी हो गया।
- भारत में सोने का निर्यात बढ़ गया।
- मंदी सविनय अवज्ञा आंदोलन करने में एक महत्वपूर्ण कारण बना।

शेयर बाजार:- वैसा स्थान जहां व्यापारिक और औद्योगिक कंपनियों के बाजार मूल्य का निर्धारण होता है।

सट्टेबाजी:- कंपनियों में पूंजी लगाकर उसका हिस्सा खरीदना था कि उसका मूल्य बढ़े और पुनः उसे बेच देना सट्टेबाजी कहलाता है।

संरक्षणवादः- अपने वस्तुओं को विदेशी वस्तुओं के आमद से होने वाले नुकसान से बचाने के लिए विदेशी वस्तु पर उचित आयात शुल्क लगाना संरक्षणवाद कहलाता है।

न्यू डील:- जन कल्याण की एक बड़ी योजना से संबंधित नई नीति जिसमें आर्थिक क्षेत्र के अलावा राजनीतिक और प्रशासनिक नीति को भी नियमित किया गया न्यू डील कहलाता है।

न्यू डील फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट के द्वारा लाया गया था।

अधिनायकः- वैसी राजनीतिक प्रशासनिक व्यवस्था जिसमें एक व्यक्ति के हाथ सारी शक्तियां केंद्रित होनी है। वह व्यक्ति परिस्थितियों का लाभ उठाकर जनता के बीच नायक की छवि बनाता है.

पूंजीवादः- पूंजी पर आधारित एक व्यवस्था जो बाजार और मुनाफा के ऊपर टीका होता है उसे पूँजीवाद कहते हैं।

शीत युद्धः- राज्य नियंत्रित और बाजार नियंत्रित अर्थव्यवस्था वाले देश के के नेतृत्वकर्ता देश सोवियत रूस और अमेरिका के बीच का सामाजिक तनाव शीत युद्ध कहलाता है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियां:- कई देशों में एक ही साथ व्यापार और व्यवसाय करने वाले कंपनियों को बहुराष्ट्रीय कंपनी कहा जाता है।

1. गिरमिटिया मजदूरों पर एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर - गिरमिटिया मजदूर औपनिवेशिक देशों के वैसे श्रमिक थे जिन्हें अनुबंध के अंतर्गत भारत से ले जाया गया। अनुबंध के अनुसार, उन्हें पाँच वर्षों तक मालिक के साथ काम करना आवश्यक था। इसके बाद ही वे स्वदेश लौट सकते थे। इस अनुबंध व्यवस्था ने एक नई दासप्रथा को जन्म दिया। इन श्रमिकों को पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार, पंजाब, हरियाणा से जमैका, फिजी, त्रिनिदाद, टोबैगो, मॉरीशस आदि देशों में ले जाया गया। इन्हें मुख्यतः नगदी फसलों (गन्ना) के उत्पादन में लगाया जाता था। 1921 में ब्रिटिश सरकार ने यह व्यवस्था बंद कर दी।

2. 1929 के आर्थिक संकट के कारणों का संक्षेप में उल्लेख करें।

उत्तर - (i) कृषिक्षेत्र में अतिउत्पादन - प्रथम विश्वयुद्ध के बाद कृषि उत्पादों, जैसे गेहूँ के उत्पादन में भारी वृद्धि हुई तथा कीमतें घट गईं जिससे उनका खरीददार नहीं रहा। अतिउत्पादन महामंदी का प्रमुख कारण बन गया।

(ii) उपभोक्ता की कमी - गरीबी एवं बेरोजगारी के कारण अन्य उत्पादों की बिक्री भी कम हो गई।

(iii) अमेरिकी पूँजी के प्रवाह में कमी - 1928-29 के मध्य अमेरिकी विदेशी कर्ज में भारी गिरावट आई। इससे अमेरिकी कर्ज पर आश्रित राज्यों के लिए संकट उत्पन्न हो गया। इससे महामंदी की स्थिति आ गई।

3. भारत पर आर्थिक महामंदी के क्या प्रभाव पड़े?

उत्तर - (i) आर्थिक महामंदी से भारत का आयात-निर्यात व्यापार घटकर आधा हो गया।

(ii) सबसे बुरी स्थिति किसानों की हुई।

(iii) बंगाल के पटसन उत्पादक महामंदी से बरबाद हो गए।

(iv) शहरी वर्ग पर महामंदी का प्रभाव नहीं पड़ा।

(v) महामंदी के प्रभाव को कम करने के लिए सरकार भारत से सोने का निर्यात करने लगी।

(vi) आर्थिक महामंदी महात्मा गाँधी द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ करने का एक कारण बन गई।

4. यूरोपीय राष्ट्रों ने महामंदी के प्रभाव से मुक्त होने के लिए क्या प्रयास किए?

उत्तर - महामंदी के प्रभाव से बाहर आने तथा अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए अनेक प्रयास किए गए। सर्वप्रथम कड़ा मुद्रा नियंत्रण स्थापित किया गया। पूर्वी यूरोप के कृषि-प्रधान राष्ट्रों तथा कॉमनवेल्थ राष्ट्रों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन 1932 में ओटावा में आयोजित किया गया। इसमें आयात-निर्यात को संतुलित करने का प्रयास किया गया। ओस्लो गुट का गठन कर क्षेत्रीय आर्थिक प्रबंधन किया गया। 1932 के. लोजान सम्मेलन द्वारा जर्मनी द्वारा फ्रांस को दी जानेवाली राशि में कटौती की गई। फ्रांस के विदेश मंत्री ब्रिया ने यूरोपीय आर्थिक संघ के गठन का सुझाव दिया। राष्ट्रसंघ ने भी अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को नियमित करने का प्रयास किया। 1933 के लंदन सम्मेलन में अनेक आर्थिक सुधारों की चर्चा की गई।

5. वृहत उत्पादन व्यवस्था से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यह व्यवस्था अमेरिकी अर्थव्यवस्था की एक विशेषता बन गई। इसका आरंभ हेनरी फोर्ड ने कार उद्योग से किया। उन्हें वृहत उत्पादन व्यवस्था का प्रणेता माना जाता है। इससे उत्पादन बढ़ा, लागत और कीमत में कमी आई, मजदूरों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ तथा उपभोक्ता वस्तुओं की माँग बढ़ गई। साथ ही, हायर परचेज (किश्त पर सामान खरीदने की परंपरा भी आरंभ हुई।

6. औद्योगिक क्रांति ने विश्व बाजार के स्वरूप का विस्तार कैसे किया ?

उत्तर - विश्व बाजार के स्वरूप को विकसित करने में औद्योगिक क्रांति की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। कारखानों के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराने तथा उत्पादित वस्तुओं के लिए बाजार उपलब्ध कराने का काम विश्व बाजार ने किया। इस प्रक्रिया में उपनिवेशवाद ने महत्त्वपूर्ण योगदान किया। साथ ही, व्यापार, पूँजी के प्रवाह और श्रमिकों के पलायन ने भी विश्व बाजार के विस्तार में सहयोग दिया।

7. विश्व बाजार के लाभ-हानि पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर - विश्व बाजार के लाभ -

(i) यह सभी वर्गों के हितों की सुरक्षा करता है।

(ii) इससे व्यापार और उद्योग को तीव्र गति मिली।

(iii) बैंकिंग और बीमा व्यवस्था का उदय हुआ।

(iv) उपनिवेशों में औद्योगिकीकरण और आधुनिकीकरण हुआ, जैसे भारत में।

(v) कृषि क्षेत्र में परिवर्तन आया।

(vi) शहरीकरण और जनसंख्या में वृद्धि हुई।

हानियाँ - (i) एशिया और अफ्रीका में उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का युग आरंभ हुआ। (ii) गरीबी, अकाल और भुखमरी बढ़ गई। (iii) उग्र राष्ट्रवाद का विकास हुआ।

8. विश्व बाजार की उपयोगिता पर प्रकाश डालें।

उत्तर - आर्थिक गतिविधियों के संचालन में विश्व बाजार की महत्त्वपूर्ण उपयोगिता है। विश्व बाजार व्यापारियों, पूँजीपतियों, किसानों, श्रमिकों, मध्यम वर्ग तथा सामान्य उपभोक्ता वर्ग के हितों की सुरक्षा करता है। इसके माध्यम से किसान अपने उत्पाद व्यापारियों के माध्यम से दूरस्थ स्थानों और देशों में बेचकर अधिक मुनाफा कमाते हैं। कुशल श्रमिकों को विश्व स्तर पर पहचान और आर्थिक लाभ मिलता है। वैश्विक बाजार में नए रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होते हैं। विश्व बाजार के द्वारा आधुनिक विचारों और नई चेतना का भी विकास और प्रचार-प्रसार होता है।

9. भूमंडलीकरण अथवा वैश्वीकरण से आप क्या समझते हैं? अथवा, भूमंडलीकरण को परिभाषित करें।

उत्तर - भूमंडलीकरण शब्द का पहला व्यवहार 1990 में अमेरिका के जॉन विलियम्सन ने किया। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा विश्व के सभी राष्ट्र राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक रूप से एक-दूसरे से जुड़ गए। इस प्रक्रिया द्वारा विश्व में एकरूपता लाने का प्रयास किया गया। भूमंडलीकरण का आरंभ 15वीं-16वीं शताब्दी से माना जाता है। 19वीं शताब्दी के मध्य से प्रथम विश्वयुद्ध आरंभ होने तक इसकी गति तीव्र, परंतु 1914 से 1991 के मध्य इसकी गति धीमी पड़ गई। सोवियत संघ के विघटन और अमेरिका नियंत्रित पूँजीवादी व्यवस्था के कारण भूमंडलीकरण (वैश्वीकरण) की प्रक्रिया पुनः बढ़ गई है।

10. भूमंडलीकरण में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भूमिका का उल्लेख करें। - बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया है। भारत जैसे

उत्तर - देशों में बेरोजगारी कम करने तथा सरकारी नौकरियों पर दबाव कम करने में इनकी अग्रणी भूमिका है। इन कंपनियों ने व्यापार और तकनीक का प्रसार कर समस्त विश्व को एक सूत्र में पिरो दिया है। इनकी आपसी प्रतियोगिता और प्रतिस्पर्द्धा का प्रभाव व्यापार-वाणिज्य पर व्यापक रूप से पड़ा है। इन कंपनियों द्वारा विश्व अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण हो गया है।

11. बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ क्या हैं?

उत्तर - ऐसी कंपनियाँ विश्व के अनेक देशों में एक ही साथ व्यापार करती हैं। इस प्रकार की कंपनियाँ 1920 के बाद ही स्थापित होने लगी थीं, परंतु द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात इनकी संख्या में तेजी से वृद्धि हुई । अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस इत्यादि ने अनेक देशों में व्यापारिक और औद्योगिक कंपनियाँ खोलीं। भारत में आज भी ऐसी अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ कार्यरत हैं जिनमें लाखों लोगों को रोजगार मिला हुआ है।

12. संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन क्यों बुलाया गया? इसकी क्या उपलब्धियाँ थीं? अथवा, ब्रेटन वुड्स समझौता की व्याख्या करें।

उत्तर - युद्धोत्तर अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के सुझावों के कार्यान्वयन की प्रक्रिया पर विचार-विमर्श करने के लिए इस सम्मेलन का आयोजन 1944 में अमेरिका के न्यू हैम्पशायर में ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर किया गया। इस सम्मेलन में दो अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संस्थानों का गठन किया गया— (i) अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) तथा (ii) अंतरराष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक अथवा विश्व बैंक (World Bank) ।

13. 1950 के बाद विश्व अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण के लिए किए जानेवाले प्रयासों पर प्रकाश डालें।

उत्तर - द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात व्यापक तबाही के प्रभाव को कम करने के उद्देश्य से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक पुनर्निर्माण के प्रयास आरंभ किए गए। 1957 में यूरोपीय आर्थिक समुदाय की स्थापना कर एक साझा बाजार की स्थापना की गई। 1995 में विश्व व्यापार संगठन बनाया गया। विभिन्न देशों ने अपने आर्थिक हितों की सुरक्षा के लिए जी-77, जी-8, ओपेक, आसियान, दक्षेस और यूरोपीय संघ का गठन किया।

14. भूमंडलीकरण के भारत पर प्रभावों को स्पष्ट करें।

उत्तर - भारत पर भूमंडलीकरण का प्रभाव जीविकोपार्जन और आर्थिक क्षेत्र में व्यापक रूप से पड़ा है। इसका प्रभाव सेवा क्षेत्र, बैंकिंग एवं बीमा क्षेत्र, पर्यटन उद्योग, सूचना और संचार के क्षेत्र में सर्वाधिक पड़ा है। इसने बेरोजगारी को कम किया है तथा रोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराए हैं। नागरिकों का जीवन स्तर भी बढ़ा है।

व्यापार और भूमंडलीकरण

1. 1929 के आर्थिक संकट के कारणों का संक्षेप में उल्लेख करें।

अथवा, 1929 के आर्थिक संकट के कारणों और परिणामों की विवेचना करें।

उत्तर - 1929 का आर्थिक संकट अनेक कारणों से हुआ। इसका विश्व अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

संकट के कारण - (i) कृषि क्षेत्र में अतिउत्पादन - प्रथम विश्वयुद्ध के बाद कृषि उत्पाद में बढ़ोतरी के कारण खाद्यान्नों; जैसे- गेहूँ की आपूर्ति आवश्यकता से अधिक हो गई। इससे अनाज के मूल्य में कमी आई और अनाज का खरीददार नहीं रहा ।

(ii) उपभोक्ता की कमी - उपभोक्ता वस्तुओं का भी अतिउत्पादन हुआ, परंतु गरीबी, बेरोजगारी से इन्हें खरीदनेवाला नहीं रहा। इससे बाजार आधृत अर्थव्यवस्था लड़खड़ा गई।

(iii) अमेरिकी पूँजी के प्रवाह में कमी - 1923 के बाद अमेरिका जो 'विश्व कर्जदाता' था, ने कर्ज देना बंद कर दिया। 1928-29 के मध्य अमेरिकी कर्ज में भारी कमी आई। इससे अमेरिकी कर्ज पर आश्रित देशों के लिए तथा स्वयं अमेरिका के लिए आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया।

परिणाम - (i) आर्थिक महामंदी से यूरोपीय अर्थव्यवस्था चरमरा गई। यूरोप के अनेकों बैंक रातों-रात बंद हो गए, मुद्रा का अवमूल्यन हो गया। इससे विश्व बाजार- आधृत अर्थव्यवस्था को गहरी ठेस लगी।

(ii) अमेरिका पर महामंदी का सबसे अधिक बुरा प्रभाव पड़ा। अमेरिकी बैंकिंग व्यवस्था चौपट हो गई, सट्टाबाजी बढ़ी, न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज में शेयरों के मूल्य में भारी गिरावट आई। गरीबी और बेरोजगारी बढ़ गई।

(iii) जर्मनी और ब्रिटेन भी आर्थिक संकट से प्रभावित हुए। जर्मन मुद्रा मार्क का अवमूल्यन हो गया। जर्मनी में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई जिसका लाभ हिटलर ने उठाया। ब्रिटेन ने महामंदी से बचने के लिए आर्थिक संरक्षणवाद की नीति अपनाई जिससे विश्व बाजार प्रभावित हुआ।

(iv) भारत में किसानों की स्थिति दयनीय हो गई। बंगाल का पटसन उद्योग बुरी तरह प्रभावित हुआ। व्यापार में भी गिरावट आई। भारत से ब्रिटेन सोना का निर्यात करने लगा। इससे असंतोष बढ़ा। इसका लाभ उठाकर महात्मा गाँधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ किया।

2. विश्व बाजार के आलोक में 1920-45 के मध्य बदलते अंतरराष्ट्रीय संबंधों की विवेचना कीजिए।

अथवा, 1919 से 1945 के बीच विकसित होनेवाले राजनीतिक और आर्थिक संबंधों पर टिप्पणी लिखें।

उत्तर - युद्धोत्तर आर्थिक व्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में दो चरण दिखलाई देते हैं। पहला चरण 1920 से 1929 तक का तथा दूसरा 1929 से द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति तक का था।

पहला चरण आर्थिक महामंदी आरंभ होने के पूर्व आर्थिक विकास और संपन्नता का काल था। इस समय विश्व पर यूरोप का प्रभाव कमजोर पड़ गया। दूसरी ओर - संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान तथा सोवियत संघ का प्रभाव बढ़ गया। नई तकनीक के उपयोग से उत्पादन बढ़ा तथा उपभोक्ता वर्ग का भी विकास हुआ। अमेरिका में पूँजीवादी तथा सोवियत संघ में साम्यवादी अर्थव्यवस्था का विकास हुआ। दोनों खेमे विश्व में अपनी व्यवस्था का प्रचार करने लगे। अपने आर्थिक विकास को बनाए रखने के लिए जापान ने आक्रामक नीति अपनाई जिसका शिकार चीन बना। औपनिवेशिक देशों में, भारत सहित, युद्ध के विनाशकारी आर्थिक परिणामों के फलस्वरूप राष्ट्रीय चेतना बढ़ी।

दूसरे चरण में आर्थिक महामंदी के प्रभावों को समाप्त करने अथवा उन्हें नियंत्रित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंध बढ़ाए गए। इसका आरंभ अमेरिका ने किया। 1932 में राष्ट्रपति एफ० डी० रूजवेल्ट ने आर्थिक महामंदी से उबरने के लिए न्यू डील की नीति अपनाई। यूरोपीय राष्ट्रों ने कड़ा मुद्रा नियंत्रण स्थापित किया। 1932 में ओटावा सम्मेलन में आयात-निर्यात को संतुलित करने का प्रयास हुआ। ओस्लो गुट का गठन कर क्षेत्रीय आर्थिक प्रबंधन किया गया। लोजान सम्मेलन द्वारा फ्रांस को जर्मनी से मिलनेवाली युद्ध क्षतिपूर्ति की राशि घटा दी गई। फ्रांस ने यूरोपीय आर्थिक संघ के गठन का सुझाव दिया। 1933 में लंदन सम्मेलन में मुद्रा में स्थिरता लाने, अंतरराष्ट्रीय

व्यापार में संरक्षणवाद की नीति त्यागने एवं परस्पर सहयोग की नीति अपनाने पर बल दिया गया। आर्थिक मंदी के बाद उत्पन्न राजनीतिक व्यवस्था ने साम्यवाद के प्रसार का मार्ग भी प्रशस्त कर दिया। 1944 में अमेरिका के न्यू हैम्पशायर के ब्रेटन वुड्स में संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन आयोजित किया गया। यहाँ अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं विश्व बैंक का गठन कर विश्व अर्थव्यवस्था को नियोजित करने का प्रयास किया गया। 1945 में आयोजित याल्टा सम्मेलन द्वारा भी आर्थिक पुनर्निर्माण का कार्य आरंभ किया गया।

3. 1945-60 के मध्य अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंधों की विवेचना कीजिए।

उत्तर - 1945 के बाद की विश्व अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को क्रमशः साम्यवादी राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था और बाजार एवं मुनाफा-आधारित पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ने नियंत्रित किया। साम्यवादी व्यवस्था का नेतृत्व सोवियत संघ ने और पूँजीवादी व्यवस्था का नेतृत्व अमेरिका ने किया। इसलिए, नई आर्थिक और राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा का विकास हुआ। दोनों विश्व के विभिन्न भागों में अपना प्रभाव बढ़ाने में लग गए। पूर्वी यूरोपीय राष्ट्रों तथा नव-स्वतंत्र, एशियाई राष्ट्रों में भी सोवियत संघ ने अपना प्रभाव बढ़ाना चाहा। उत्तरी कोरिया और वियतनाम साम्यवादी प्रभाव में आ गए।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के हिमायती अमेरिका ने साम्यवादी विचारधारा और अर्थतंत्र के प्रसार को रोकने का प्रयास किया। उसने दक्षिण अफ्रीका तथा मध्य एवं पश्चिम एशिया के तेल से संपन्न राष्ट्रों में सैन्य बल का सहारा लेकर अपनी आर्थिक नीति को लागू किया। दक्षिण अमेरिका में भी यही नीति अपनाई गई। पश्चिम-मध्य एशियाई देशों पर अपना प्रभाव स्थापित कर अमेरिका ने तेल और गैस के स्रोत पर अपना प्रभाव जमा लिया। 1945-60 के मध्य पश्चिमी यूरोपीय देशों में आर्थिक संबंधों का विकास हुआ। इन राष्ट्रों ने समन्वय एवं सहयोग के एक नए युग का आरंभ किया जिसे यूरोपीय एकीकरण कहा जाता है। 1944 में नीदरलैंड, बेल्जियम और लक्जेमबर्ग ने बेनेलेक्स संघ का गठन किया। 1948 में ब्रूसेल्स की संधि द्वारा कोयला और इस्पात के क्षेत्र में यूरोपीय आर्थिक सहयोग आरंभ हुआ। 1957 में यूरोपीय इकोनॉमिक कम्यूनिटी की स्थापना की गई। इन राष्ट्रों के प्रयासों से एक साझे बाजार की स्थापना की गई। अमेरिका का आर्थिक प्रभाव इन देशों पर बना रहा। नव-स्वतंत्र अफ्रीकी और एशियाई देशों पर भी सोवियत संघ और अमेरिका अपना प्रभाव स्थापित करने के लिए प्रयासशील हो गए।

4. भूमंडलीकरण ने किस प्रकार आमलोगों के जीवन को प्रभावित किया है ?

अथवा, भूमंडलीकरण के कारण आमलोगों के जीवन में आनेवाले परिवर्तनों को स्पष्ट करें।

उत्तर - भूमंडलीकरण की प्रक्रिया के कारण विश्व के सभी राष्ट्र राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक रूप से एक-दूसरे से जुड़ गए। भूमंडलीकरण ने विश्व स्तर पर लोगों को भौतिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर एकीकृत कर एकरूपता लाने का प्रयास किया है। आमलोगों का जीवन भूमंडलीकरण से गहरे रूप से प्रभावित हुआ है। वर्तमान समय में जीविकोपार्जन और आर्थिक क्षेत्र में इसका व्यापक प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है। भूमंडलीकरण ने राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को निरूपित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुक्त बाजार एवं व्यापार, खुली प्रतिस्पर्द्धा और बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रसार हुआ है। उद्योग एवं सेवा क्षेत्र का निजीकरण एवं विस्तार हुआ है। इसका जनजीवन पर व्यापक असर पड़ा है। जीविकोपार्जन के क्षेत्र में यह प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखलाई देता है। 1991 के पश्चात सेवा, बीमा क्षेत्र, पर्यटन उद्योग, सूचना और संचार के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया है । सेवा क्षेत्र के अंतर्गत ऐसी आर्थिक गतिविधियाँ आती हैं जिसमें ग्राहकों को सुविधाएँ उपलब्ध कराकर उनके बदले पारिश्रमिक लिया जाता है। यातायात, बैंक और बीमा, पर्यटन, दूर-संचार की सुविधा उपलब्ध कराने के व्यवसाय में लाखों लोगों को रोजगार मिले हैं। पर्यटन उद्योग का विकास होने से टूर एवं ट्रैवेल एजेंसियों की स्थापना हुई है। बड़े नगरों में शॉपिंग मॉल स्थापित किए गए हैं। बैंकिंग और बीमा क्षेत्र का विस्तार हुआ है। राष्ट्रीय संस्थाओं के अतिरिक्त निजी कंपनियाँ भी इसमें संलग्न हैं। विगत वर्षों में सबसे अधिक विस्तार सूचना और संचार के क्षेत्र में हुआ है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने सरकारी नौकरी पर दबाव कम कर दिया है। यह भूमंडलीकरण का ही प्रभाव है कि नागरिकों का जीवन स्तर बढ़ा है और उन्हें रोजगार के अवसर उपलब्ध हुए हैं।

5. 1929 के आर्थिक संकट के कारणों और परिणामों की विवेचना करें।

उत्तर - 1929 का आर्थिक संकट अनेक कारणों से हुआ। इसका विश्व अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

संकट के कारण - (i) कृषि क्षेत्र में अतिउत्पादन प्रथम विश्वयुद्ध के बाद कृषि उत्पाद में बढ़ोतरी के कारण खाद्यान्नों; जैसे- गेहूँ की आपूर्ति आवश्यकता से अधिक हो गई। इससे अनाज के मूल्य में कमी आई और अनाज का खरीददार नहीं रहा । अर्थशास्त्री काडलिफ के अनुसार, कृषि उत्पादन एवं खाद्यान्नों के मूल्य की विकृति 1929-32 के आर्थिक संकटों के प्रमुख कारण थे।

(ii) उपभोक्ता की कमी - उपभोक्ता वस्तुओं का भी अतिउत्पादन हुआ, परंतु गरीबी, बेरोजगारी से इन्हें खरीदनेवाला नहीं रहा। इससे बाजार आधृत अर्थव्यवस्था लड़खड़ा गई।

(iii) अमेरिकी पूँजी के प्रवाह में कमी - 1923 के बाद अमेरिका जो 'विश्व कर्जदाता' था, ने कर्ज देना बंद कर दिया। 1928-29 के मध्य अमेरिकी कर्ज में भारी कमी आई। इससे अमेरिकी कर्ज पर आश्रित देशों के लिए तथा स्वयं अमेरिका के लिए आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया।

परिणाम - (i) आर्थिक महामंदी से यूरोपीय अर्थव्यवस्था चरमरा गई। यूरोप के अनेकों बैंक रातों-रात बंद हो गए, मुद्रा का अवमूल्यन हो गया। इससे विश्व बाजार-आवृत अर्थव्यवस्था को गहरी ठेस लगी।

(ii) अमेरिका पर महामंदी का सबसे अधिक बुरा प्रभाव पड़ा। अमेरिकी बैंकिंग व्यवस्था चौपट हो गई, सट्टेबाजी बढ़ी, न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज में शेयरों के मूल्य में भारी गिरावट आई। गरीबी और बेरोजगारी बढ़ गई।

(iii) जर्मनी और ब्रिटेन भी आर्थिक संकट से प्रभावित हुए। जर्मन मुद्रा मार्क का अवमूल्यन हो गया। जर्मनी में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई जिसका लाभ हिटलर ने उठाया। ब्रिटेन ने महामंदी से बचने के लिए आर्थिक संरक्षणवाद की नीति अपनाई जिससे विश्व बाजार प्रभावित हुआ।

(iv) भारत में किसानों की स्थिति दयनीय हो गई। बंगाल का पटसन उद्योग बुरी तरह प्रभावित हुआ। व्यापार में भी गिरावट आई। भारत से ब्रिटेन सोना का निर्यात करने लगा। इससे असंतोष बढ़ा। इसका लाभ उठाकर महात्मा गाँधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ किया।

6. 1945-60 के मध्य अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंधों की विवेचना कीजिए।

उत्तर - 1945 के बाद की विश्व अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को क्रमशः साम्यवादी राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था तथा बाजार और मुनाफा- आधारित पूँजीवादी व्यवस्था ने नियंत्रित किया। दोनों व्यवस्थाएँ एक-दूसरे की विरोधी एवं प्रतिस्पर्द्धा थीं। इसलिए, नई आर्थिक और राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा की दौड़ आरंभ हुई। 1945-60 के मध्य पश्चिमी यूरोपीय देशों (ब्रिटेन, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, स्पेन) में आर्थिक संबंधों का विकास हुआ तथापि विश्व राजनीति और आर्थिक क्षेत्र में इन देशों का महत्त्व कमजोर पड़ गया। इसका प्रमुख कारण इनके उपनिवेशों का स्वतंत्र होना था। आर्थिक विपन्नता से बचने एवं साम्यवादी प्रभाव को रोकने के लिए इन राष्ट्रों ने समन्वय एवं सहयोग

की नीति अपनाई जिसे यूरोपीयन एकीकरण कहा जाता है। ब्रूसेल्स की संधि (1948) द्वारा कोयला और इस्पात के क्षेत्र में यूरोपीय आर्थिक सहयोग आरंभ हुआ। 1957 में यूरोपीय इकोनॉमिक कम्यूनिटी (ई०ई०सी०) की स्थापना की गई। इसने एक साझा बाजार की स्थापना की। 1960 में ब्रिटेन भी इस समुदाय का सदस्य बन गया। अमेरिकी आर्थिक प्रभाव इस समुदाय पर बना रहा; क्योंकि उसी की सहायता से इन देशों का आर्थिक पुनर्निर्माण हुआ।

7. भूमंडलीकरण ने भारत को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर - भूमंडलीकरण से भारतीय व्यापार को हानि के साथ कुछ लाभ भी हुए। आरंभ में इंगलैंड भारत से भारी मात्रा में कपास का निर्यात करता था। परंतु, कृषि क्रांति ने कपास निर्यात में कमी कर दी। साथ ही, औद्योगिक क्रांति से सूती कपड़े का निर्यात भी घट गया। अब लंगलैंड के बने कपड़े भारत में भारी मात्रा में बिकने लगे। इस व्यवस्था ने भारतीय व्यापरियों को ब्रिटिश व्यापरियों से प्रतिस्पर्द्धा करने के लिए मजबूर किया। विश्व बाजार में यहाँ के बने कपड़ों का निर्यात केवल 15 प्रतिशत रह गया।

दूसरी तरफ, इस व्यवस्था ने कच्चे माल के निर्यात को बढ़ाया। नील के निर्यात में बढ़ोतरी हुई। अफीम के निर्यात में भी वृद्धि हुई, क्योंकि इसके व्यापार से ब्रिटेन चीन में प्रवेश करना चाहता था। 19वीं सदी में भारत से खाद्यान्न व अन्य कच्चा माल का निर्यात भारी मात्रा में होने लगा। परंतु, भूमंडलीकरण से ब्रिटेन को अधिक लाभ हुआ और भारत में उसकी जड़ और मजबूत हो गई ।

7. Trade And Globalization

1. विश्व बाजार के रूप में पहला कौन-सा नगर उभरकर सामने आया?

(a) लंदन

(b) पेरिस

(c) अलेक्जेंड्रिया

(d) दिलमुन

Ans – C

2. अलेक्जेंड्रिया किस सागर के मुहाने पर बसा हुआ था?

(a) काला सागर

(b) लाल सागर

(c) अरब सागर

(d) भूमध्यसागर

Ans – B

3. प्राचीन काल में किस स्थल मार्ग से एशिया और यूरोप का व्यापार होता था?

(a) सूती मार्ग

(b) रेशम मार्ग

(c) उत्तरा पथ

(d) दक्षिण पथ

Ans – B

4. सिकंदर कहाँ का निवासी था?

(a) रोम

(b) चीन

(c) यूनान

Ans – C

(d) मिस्र

5. आधुनिक युग में अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में होनेवाली सबसे बड़ी क्रांति कौन-सी थी?

(a) वाणिज्यिक क्रांति

(b) औद्योगिक क्रांति

(c) साम्यवादी क्रांति

(d) भौगोलिक खोज

Ans – B

6. ईस्ट इंडिया कंपनी अफीम किस देश में भेजती थी?

(a) अफगानिस्तान

(b) अमेरिका

(c) जापान

(d) चीन

Ans – D

7. विश्व बाजार के स्वरूप का आधार क्या था?

(a) रेशम उद्योग

(b) लोहा उद्योग

(c) कोयला उद्योग

(d) वस्त्र उद्योग

Ans – D

8. विश्व बाजार का विस्तार आधुनिक काल में किस समय से आरंभ हुआ?

(a) 15वीं शताब्दी

(b) 18वीं शताब्दी

(c) 19वीं शताब्दी

(d) 20वीं शताब्दी

Ans – B

9. बाजार को स्वरूप विश्वव्यापी किस क्रांति के बाद हुआ?

(a) औद्योगिक क्रांति

(b) अमेरिकी क्रांति

(c) फ्रांसीसी क्रांति

(d) चीनी क्रांति

Ans – A

10. भारत के किस प्रदेश से अधिकांश गिरमिटिया श्रमिक बाहर ले जाए गए?

(a) राजस्थान से

(b) केरल से

(c) पंजाब से

(d) उत्तर प्रदेश से

Ans – B

11. गिरमिटिया मजदूर बिहार के किस क्षेत्र से भेजे जाते थे?

(a) पूर्वी क्षेत्र से

(b) पश्चिमी क्षेत्र से

(c) उत्तरी क्षेत्र से

(d) दक्षिणी क्षेत्र से

Ans – B

12. 'गिरमिटिया' किसे कहते हैं?

(a) अनुबंधित मजदूर को

(b) रोगियों को

(c) छिपकली को

(d) अंग्रेजी को

Ans – A

13. भारत में अकाल कब पड़े थे?

(a) 1850 1920

(b) 1860 1920

(c) 1870 से 1920

(d) 1870 1930

Ans – A

14. कच्चा कपास का निर्यात 1800 से 1872 के बीच 5 प्रतिशत से बढ़कर कितना प्रतिशत हो गया था?

(a) 40 प्रतिशत

(b) 35 प्रतिशत

(c) 50 प्रतिशत

(d) 45 प्रतिशत

Ans – B

15. इंग्लैंड कपास का आयात मुख्य रूप से कहाँ से करता था?

(a) भारत से

(b) चीन से

(c) फ्रांस से

(d) स्पेन से

Ans – A

16. पेरिस शांति समझौता कब हुआ था?

(a) 1918 में

(b) 1919 में

(c) 1920 में

(d) 1921 में

Ans – B

17. प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद किसके द्वारा यूरोप की अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया गया?

(a) रूस

(b) जर्मनी

(c) अमेरिका

(d) फ्रांस

Ans – B

18. 1923 में विश्व को पूँजी देने वाला दुनिया का सबसे बड़ा कर्जदाता देश कौन था?

(a) फ्रांस

(b) अमेरिका

(c) जर्मनी

(d) इंगलैंड

Ans – B

19. 'दि कॉमर्स ऑफ नेशन' पुस्तक के लेखक कौन थे?

(a) एडम स्मिथ

(b) काडलिफ

(c) कीन्स

(d) हैरोल्ड लास्की

Ans – C

20. विश्व व्यापी आर्थिक संकट किस वर्ष आरंभ हुआ था?

(a) 1914

(b) 1922

(c) 1929

(d) 1927

Ans – C

21. भारत में आर्थिक मंदी का सबसे बुरा प्रभाव किस पर पड़ा?

(a) मध्यम वर्ग

(b) जमींदारों पर

(c) किसानों पर

(d) व्यापारियों पर

Ans – C

22. गुलामी प्रथा का प्रचलन किस देश में था?

(a) भारत

(b) चीन

(c) अमेरिका

(d) रूस

Ans – C

23. आर्थिक महामंदी का विश्व अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा?

(a) उत्पादन में तेजी

(b) उपभोक्ता वस्तुओं की माँग में तेजी

(c) अकाल

(d) बेरोजगारी

Ans – D

24. कार्न लॉ द्वारा ब्रिटेन में किस अनाज को आयात प्रतिबंधित कर दिया गया?

(a) गेहूँ का

(b) चावल का

(c) मक्का का

(d) दलहन का

Ans – C

25. 1820 से 1914 के बीच विश्व व्यापार में कितना गुना की वृद्धि हो चुकी थी?

(a) 15 से 20 गुना

(b) 25 से 40 गुना

(c) 20 से 40 गुना

(d) 30 से 50 गुना

Ans – B

26. अमेरिकी मुद्रा का नाम क्या है?

(a) पौंड

(b) डॉलर

(c) मार्क

(d) रूबल

Ans – B

27. आर्थिक संकट (मंदी) के कारण यूरोप में कौन-सी नई शासन प्रणाली का उदय हुआ?

(a) साम्यवादी शासन प्रणाली

(b) लोकतांत्रिक शासन प्रणाली

(c) फाशीवादी नाजीवादी शासन

(d) पूँजीवादी शासन प्रणाली

Ans – C

28. वह देश जिसपर आर्थिक मंदी का प्रभाव बिलकुल नहीं पड़ा था?

(a) इंगलैंड

(b) अमेरिका

(c) जर्मनी

(d) रूस

Ans – D

29. अमेरिका के किस राष्ट्रपति डोल नवीन आर्थिक नीतियों को लागू

(a) निक्सन

(b) जार्ज वाशिंगटन

(c) फॅक्लीन डी रूजवेल्ट

(d) जार्ज बुश

Ans – C

30. वृहत् उत्पादन को नीति किसने अपनाई?

(a) रूजवेल्ट ने

(b) विंस्टन चर्चिल ने

(c) हेनरी फोर्ड ने

(d) स्टालिन ने

Ans – C

31. ओटावा सम्मेलन किस वर्ष हुआ था?

(A) 1929 में

(B) 1930 में

(C) 1932 में

(d) 1935 में

Ans – C

32. बृहत् उत्पादन व्यवस्था किस देश में आरंभ की गई?

(a) ब्रिटेन में

(b) रूस में

(c) अमेरिका में

(d) जर्मनी में

Ans – C

33. ब्रेटन वुड्स सम्मेलन किस वर्ष हुआ?

(a) 1947

(b) 1948

(c) 1944

(d) 1952

Ans – C

34. संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन किस वर्ष हुआ था?

(a) 1932 में

(b) 1933 में

(c) 1943 में

(d) 1944 में

Ans – D

35. 1945 के बाद विश्व में कितने अर्थव्यवस्था का प्रभाव बढ़ा?

(a) एक

(b) दो

(c) तीन

(D) चार

Ans – B

36. साम्यवादी अर्थव्यवस्था वाले देशों के गुट का नेतृत्व कौन कर रहा था?

(a) सोवियत रूस

(b) अमेरिका

(c) ब्रिटेन

(d) जर्मनी

Ans – A

37. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था वाले देशों के गुट का नेतृत्व कौन कर रहा था?

(a) सोवियत रूस

(b) इंगलैंड

(c) अमेरिका

(d) फ्रांस

Ans – C

38. 1945 से 1960 के दशक में महत्वपूर्ण संबंधों का विकास कहाँ हुआ था?

(a) पूर्वी यूरोप

(b) पश्चिमी यूरोप

(c) अमेरिका

(d) अफ्रीका

Ans – B

39. व्रिया किस देश के विदेश मंत्री थे

(a) फ्रांस

(b) इंगलैंड

(c) अमेरिका

(d) जर्मनी

Ans – A

40. ब्रेसेल्स संधि कब हुआ?

(a) 1946

(b) 1948

(c) 1945

(d) 1944

Ans – B

41. W.T.O (विश्व व्यापार संगठन) की स्थापना किस वर्ष की गई?

(a) 1995

(b) 1994

(c) 1996

(d) इनमें से कोई नहीं

Ans – A

42. दक्षेस की स्थापना किस वर्ष हुई?

(a) 1964

(b) 1967

(c) 1971

(d) 1985

Ans – D

43. अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमय का प्रवाह किस पर

(a) व्यापार

(b) श्रम

(c) पूँजी

(d) उद्योग

Ans – D

44. भूमंडलीकरण शब्द का ईजाद किसने किया?

(a) कीन्स ने

(b) ब्रियाँ ने

(c) फ्रेडरिक विलियम ने

(d) जॉन विलियम्सन ने

Ans – D

45. जी-8 की स्थापना कब हुई थी?

(a) 1975 में

(b) 1977 में

(c) 1978 में

(d) 1979 में

Ans – A

46. भूमंडलीकरण की शुरुआत किस दशक में हुई?

(a) 1990 के दशक में

(b) 1970 के दशक में

(c) 1960 के दशक में

(d) 1980 के दशक में

Ans – A

47. द्वितीय महायुद्ध के बाद यूरोप में कौन-सी संस्था का उदय आर्थिक दुष्प्रभावों को समाप्त करने के लिए हुआ?

(a) सार्क

(b) नाटो

(c) ओपेक

(d) यूरोपीय संघ

Ans – D

48. विश्व व्यापार संगठन का मुख्यालय कहाँ है?

(a) जेनेवा

(b) पेरिस

(c) न्यूयार्क

(d) वाशिंगटन

Ans – A

49. विश्व बैंक की स्थापना कब हुई?

(a) 1919

(b) 1929

(c) 1944

(d) 1949

Ans – C

50. भूमंडलीकरण की शुरूआत कब से हुई?

(a) 1990

(b) 1991

(c) 1992

(d) 1994

Ans – B

51. 1991 के बाद संपूर्ण विश्व में किस क्षेत्र का विस्तार काफी तीव्र गति से हुआ?

(a) सेवा क्षेत्र

(b) कृषि क्षेत्र

(c) उद्योग क्षेत्र

(d) व्यापार क्षेत्र

Ans – A